3.3.3

International Refereed
Impact Factor : 2.725

'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN : 2229-7227)
वर्ष 7, अंक 27 (पृ.सं. 295-296)
विक्रमी सम्वत्: 2074 (जुलाई-सितम्बर 2017)

मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में भारतीय किसानों का चित्रण

मधु राठौर
हिन्दी–विभाग
राजकीय महिला महाविद्यालय

शोध–आलेख सार

प्रेमचंद के साहित्य में उपनिवेशकालीन भारतीय किसान का चित्रण मिलता है। उनकी सम्पूर्ण कला चेतना भारतीय किसान की जीवन पद्धति से प्रभावित व निर्धारित हुई है। गोदान, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि जैसे उपन्यासों और सवा सेर गेहूँ, पंच–परमेश्वर, मुक्तिमार्ग, पूस की रात, कफन जैसे कहानियों में मुख्य रूप से किसान के विविध पक्षों को ही उभारकर सामने रखा गया है। इसके अलावा जिन रचनाओं के विषय किसानों से सम्बन्धित नहीं है, उनमें भी कहीं न कहीं किसान दृष्टि का उपयोग किया गया है। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में किसानों को जिस जमीन पर खड़ा किया है उसकी पड़ताल आवश्यक है। 'गोदान' में मुंशी प्रेमचंद ने होरी नामक किसान की दयनीय दशा का वर्णन किया है। होरी की जिन्दगी भर एक गाय खरीदने की इच्छा पूरी नहीं हो पाती।

मुख्य–शब्द : महाजन, साम्राज्यवाद, पॉलिटिकल एजेन्ट ।

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से है। इनका मूल नाम धनपतराय था। इन्हें नवाबराय व मुंशी प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचन्द्र चट्टोपध्याय ने उन्हें उपन्यास सम्राट कहकर संबोधित किया। मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के गौरव हैं, प्रेमचंद के सम्पूर्ण साहित्य का केन्द्र उनके साहित्य से व्यक्त किसान संवेदनशीलता है। भारतीय किसान का दिल प्रेमचंद की रचनाओं में धड़कता है। प्रेमचन्द से पहले व उनके बाद भी किसानों का ऐसा हिमायती साहित्यकार पैदा नहीं हुआ जिसे हम भारतीय किसान कहते हैं। मुंशी प्रेमचंद को किसान जीवन का महान रचनाकार माना जाता है।

प्रेमचंद के साहित्य में उपनिवेशकालीन भारतीय किसान का चित्रण मिलता है। उनकी सम्पूर्ण कला चेतना भारतीय किसान की जीवन पद्धति से प्रभावित व निर्धारित हुई है। गोदान, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि जैसे उपन्यासों और सवा सेर गेहूँ, पंच–परमेश्वर, मुक्तिमार्ग, पूस की रात, कफन जैसे कहानियों में मुख्य रूप से किसान के विविध पक्षों को ही उभारकर सामने रखा गया है। इसके अलावा जिन रचनाओं के विषय किसानों से सम्बन्धित नहीं है, उनमें भी कहीं न कहीं किसान दृष्टि का उपयोग किया गया है। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में किसानों को जिस जमीन पर खड़ा किया है उसकी पड़ताल आवश्यक है। 'गोदान' में मुंशी प्रेमचंद ने होरी नामक किसान की दयनीय दशा का वर्णन किया है। होरी की जिन्दगी भर एक गाय खरीदने की इच्छा पूरी नहीं हो पाती। गोदान की शुरूआत किसान जीवन के लम्बे, ऐतिहासिक आकंलन पर आधारित है। उसके प्रथम अध्याय में होरी और धनिया के पिछले बीस–पच्चीस वर्षों की गृहस्थी की कहानी कही है।

"हर एक गृहस्थ की भाँति होरी के मन में भी गऊ की लालसा चिरकाल में संचित चली आती थी। यही उसके जीवन का सबसे बड़ा स्वान, सबसे बड़ी साध थी। बैक सूद से चैन करने या जमीन खरीदने या महल बनवाने की विशाल आकांक्षाएँ उनके नन्हें से हृदय में कैसे समाती"[1] इसमें होरी के जीवन में आकांक्षाओं का अभाव दिखाया है कि उसने ऐसा जीवन जीया है कि जिसमें सिर्फ एक गाय पाल लेने की इच्छा ही पैदा हो सकती है।

गोदान उपन्यास में प्रेमचंद ने न केवल किसानों- जमीदारों के सम्बन्ध को दिखाया बल्कि उनका प्रयास किसान के आन्तरिक भावात्मक व वैचारिक जीवन का चित्रण करता रहा है।

अपनी स्थिति को समाज के ठोस संदर्भों में रखता हुआ होरी भोला से कहता है "अनाज तो सब का सब खलिहान में ही तुल गया। जमींदार ने अपना लिया, महाजन ने अपना लिया। मेरे लिए पाँच सेर अनाज बच रहा। यह मूसा तो मैंने रातों–रात ढोकर छिपा दिया था, नहीं तिनका भी न बचता। जमींदार तो एक ही है। मगर महाजन तीन–तीन हैं, सहुआइन अलग और मंगरु अलग और दतादीन अलग। किसी का भी ब्याज पूरा न चुका जमींदार के भी आधे रुपए बाकी पड गए। सहुआइन से फिर रुपए उधार लिए तो काम चला"[2]

प्रेमचंद ने 'गोदान' में एक–एक घटना को इतनी तन्मयता और सावधानी से चुना है कि भारतीय किसान की सूक्ष्म जानकारी रखने वाले पाठक को भी सुखद आश्चर्य होता है। उपन्यास के अन्त में हमे पता चलता है कि होरी किसान अंतिम समय तक संघर्ष करता है और गाय लेने की उसकी इच्छा पूरी नहीं होती है।

रंगभूमि में प्रेमचंद ने किसानों की पीड़ाओं की सांकेतिक अभिव्यक्ति की है। उन्होंने मुख्य रूप से जमींदारी व्यवस्था में रह रहे उत्तरी भारत के किसानों की हालत का वर्णन किया है। विशेष रूप से रायबरेली, प्रतापगढ़, बनारस, लखनऊ के आसपास के किसानों से अपनी रचनाओं में उपस्थित किया है। 'इस्तमारी बन्दोबस्त' के अन्तर्गत किसानों के शोषण की प्रक्रिया का चित्रण उन्होंने किया है। प्रेमाश्रम के अन्त में उन्होंने जमींदारहीन गाँव को आदर्श गाँव के रूप में उपस्थित किया है। साम्राज्यवाद, किसान के शोषण की अदृश्य और मुख्य कड़ी 'कर्मभूमि' जैसी रचनाओं में है। 'कायाकल्प' और 'कर्मभूमि' में किसानों के आन्दोलन को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया।

प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में राज्य कर्मचारियों और पॉलिटिकल एजेन्ट के दौरों का विस्तृत वर्णन किया है। ऐसे समय किसानों की जो दुर्गति होती है, उसके लिए जमींदारों को कतई दोष नहीं दिया जा सकता। 'रियासत का दीवान' में पॉलिटीकल एजेन्ट आते हैं उनके स्वागत के लिए रुपया पानी की तरह बहाया जाता है। इसमें उद्देश्य यह होता है कि एजेन्ट खुश हो जाए ताकि सरकार के पास रियासत के पक्ष में रिपोर्ट लिख दो। इसके लिए किसानों से चन्दा लिया जाता है" पुलिस गाँव–गाँव चन्दा उगाहती फिरती थी। रकम दीवान साहब नियत करते थे। वसूल करना पुलिस का काम था। फरियाद की कहीं सुनवाई न थी। चारों ओर त्राहि–त्राहि मची हुई थी। हजारों मजदूर सरकारी इमारतों, सजावट और सड़क की मरम्मत में बेगार भर रहे थे।[3]

प्रेमाश्रम में किसान जीवन की जो समस्याएँ वर्णित है और उनके जो समाधान बताए गए हैं। उनकी परम्परा उनके लेखों में मिलेगी। प्रेमचंद की मौलिकता और साहस इस बात में है कि इस जीवन को उन्होंने लेखों का नहीं, उपन्यासों और कहानियों का विषय बताया। स्वयं प्रेमचंद ने भी कुछ दिनों तक मर्यादा का सम्पादन किया था। इस काल की दूसरी महत्वपूर्ण पत्रिका 'सरस्वती' थी" यह, राजनीतिक पत्रिका नहीं थी बल्कि जैसा रामविलास शर्मा ने लिखा है सरस्वती ज्ञान की पत्रिका थी।[4]

प्रेमचंद ने अपने साहित्य में भारतीय किसान का व्यापक और संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत किया है। उन्होंने भारतीय किसान की इतिहास निरपेक्ष तस्वीर पेश करने का प्रयास नहीं किया है। उन्होंने अपने साहित्य में समकालीन किसान की तस्वीर पेश की है। उन्होंने उन सब परिस्थितियों का वर्णन विस्तार से किया है जिनमें भारतीय किसान को जीवन बसर करना पड़ रहा है। उन परिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ, टूटता हुआ, समझौता करता हुआ परिस्थितियों को तोड़ता हुआ और नयी परिस्थितियों का निर्माण करता हुआ भारतीय किसान का 'व्यक्तित्व' प्रेमचंद की रचनाओं में उभर कर सामने आता है।[5]

संदर्भ

1. मुंशी प्रेमचंद 'गोदान' पृ. 8 सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद
2. मुंशी प्रेमचंद 'गोदान' पृ. 21 सरस्वती प्रेस इलाहाबाद
3. प्रेमचंद मानसरोवर भाग–2 पृ. 168–169, सरस्वती प्रेस इलाहाबाद
4. प्रेमचंद और भारतीय किसान, प्रोफेसर रामवक्ष, पृ. 287, वाणी प्रकाशन।
5. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण पृ. 360 ले., डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1967